

DPN 5677

Title: सूर्य सिद्धान्त / SŪRYA SIDDHĀNTA

Run. No. 6368

Cat. No.

Micro. No.

Subject ज्योतिष / Astrology

Religion: Hīndu / Bauddha

Language: Skt. / New. / Nep. / Skt. - New. / Maith. - New. / New. - Nep. /

Size in cms. 12.0 x 30.0

Folios 26

Lines (in a page) 8/9

Compl. / Incompl.

Beginning or end folia missing. - ह्योने व व्यूनेमा पै म्प ।
Chapt. / act /

Author / translator देवदत्त जयनाथ यज्ञ

Scribe / donor

Date: NS / SS / VS / KS

Ruler / place

Script: New. / Dev. / Bhuj. / Ran. /

Illus.:

Material: palmleaf / paper / thyasaphu /

Condition: fine / damaged by worms, rats, water /

Beginning, colophon, post-colophon:

ॐ
 मेघा ॥ द्याभ्यन्तरः स भान्ति मकरास्तथा ॥
 ॥ ५० ॥ ॥ चन्द्राविभौमः पापपादुः श
 भौमस्त ॥ शरादुशनिर्भोगवा ॥ मीमि
 संभु ॥ अनेतिहि कासुतः ॥ ३ ॥ छात्रप्रपाकानि काशो वायदिवांशके ॥ १३ ॥ अर्थि भोगि भरी
 ॥ ॥ मंडलाधारे ॥ नृती ॥ कवर्तिचाप्याये ॥ ॥ कै गृ हैं ॥ १५ ॥ श्री स्वह
 ॥ ॥ मिदि भौलये ती ॥ यो प ॥ ॥ श्री नी वै भवे दाहास्त्र श्री र स्तमति ॥ ५
 ॥ ॥ दितस्वगुरु ॥ मेन गृहेस्ति तौ पी वा मी व गे रा ॥ ६ ॥ अ सं गुरुः सक
 ॥ ॥ श्री ना ना ना ॥ ६ ॥ ह व ले भू भू म गृहेः नद योन उत पाप सहा
 ॥ ॥ १० ॥ द रा मे भु च हु ॥ ॥ श्री वै भौ प्र ग रु च व छ जी रा ज यो जी व ये जा त स धु भा व्वा

45 40 35 30 25 20 15 10

लज्जवद्र॥ न संशय ॥ ६३ ॥ लज्जतश्चास्यतो दापी कजेण पतिताग्रहा ॥ येका वाता
॥ ५ ॥ ससाख्याता महाराजा न वेत्त ॥ ६४ ॥ वज्रस्थाने यदाशु को दसमे
च बृहस्पती यच्च वसीही का पुत्रो राजा भवति वी कजी ॥ ६५ ॥ वज्र
ग्रहा एक गता यदि सौम्या न वति हो भ्रातृधी धर्मलज्जा ॥ ६६ ॥ राजा यो
न वेदयं ॥ ६६ ॥ वी को जे स पु मेलने न वति च यदाग्रहा ॥ हं यो गवो जा
ली पातस्व वंशस्य च पालक ॥ ६७ ॥ सर्वे ग्रहे यदा चंद्रो वी जाता चो न रिक्षे
ते ॥ यच्च जे न स्थित भुसदि ध्या मुर्धरा पाते ॥ ६८ ॥ यच्च यमे चा दश च
दीती यच्च यदाग्रहा ॥ सीहा स मस्यो यो जे यराज सी ह सने वसत ॥ ६९ ॥
लज्जे मुक्क यधो न स के दे जासी बृहस्पति दस मे गारको नासी सति ॥ ७० ॥

आ-१

ख-२

किं करि धति ॥ ७० ॥ मय सस्यो यदा कुरा सौम्या लज्जे पतिताग्रहा ॥ यजयो
गोत्रयो जाता स पु मयि को न वेत्त ॥ ७१ ॥ स्थाने यदा पाप के द स्थाने भुभाग्रहा
सर्वसीद्धि न वेत्त स्य राजे स म्मान मे व च ॥ ७२ ॥ मे व लज्जे यदा भानु श्व नु ये द
बृहस्पतिः दस मे च कु जो जातो वी श्व स्या धी पती न वेत्त ॥ ७३ ॥ लज्जे शौरी स
था चंद्रो वि को गो गो व मा स्करौः क म् स्थाने न वे द्रो मो राज योगो वी धि यते ॥ ७४ ॥
के द्र वा च्छि यते सौम्य राजा दिग्ग पति न वेत्त ॥ के द्र पा पे चो ब्रु सस्ये राजा स्या
रिताग्रहा ॥ ७५ ॥ बलि सौम्य ग्रहो लज्जे के द्र स्यो यदि वि द्यते ॥ तदा जी हं स
रि छा नीत म सु ध्यो य था द ये ॥ ७६ ॥ वज्र के द्र गता सौम्या पा पा वा द स य च
यो स ए जा वी श्व वी स्या तो श्व ज क्ष त्र वी नु धि तः ॥ ७७ ॥ लज्जा द छ मे गो भौ

0 CMTS. 5 10 15 20 25 30 35

लज्जा वद ॥ मन्त्रिको राजीव गोरविः धर्मको जायते राजा धनवान् राजा जायते ॥ ७८ ॥ लज्जा
 च चमेस्थाने पदासु र्ध्वो बृहस्पती ॥ तदा वीर्या धनैः प्रणीता जायते जातको तस्य ॥ ७९ ॥
 स कोपी यदि कै द्रुस्थं भुक्नोतीति वा दुध ॥ जायते वतथा वालो धनो धनो देवता
 राज ॥ ८० ॥ धीवी सौ म्भवा गानो चारवा यम जेथ वा पुन ॥ अदे पुन गानो यदे नीध
 नाते वपि शुक् ॥ ८१ ॥ ते च स्थिते जन्म ना यो ग्रहस्था तदा शि नाथ श्वत दुध
 ना ॥ मन्त्रिको राघादिके दवर्त राजा भवेत् ॥ धर्मिक चक्रवर्ति ॥ ८२ ॥ घ
 क्रमेण राजा नोपापशत्रुवी मर्दक ॥ घ घे सोम सदा रो जी घ घे श्वदुस सुखी ॥
 ॥ ८३ ॥ लज्जा तृति पभवने यदि सौ म्भवा तम वेत् ॥ वी पुत्रो कन्यका सिद्धि ॥ शम ॥
 यते नात्र संशयः ॥ ८४ ॥ लज्जा तृति दे भवने बलिनी वा वस्याति यदि पंच पुत्रा ॥ ८५ ॥

ये-द
 दास्यु जायते मानवस्य च ॥ ८५ ॥ लज्जा तृति भवने बाले भुक्नो पदा भवेत् ॥ कन्य
 घयं च पंच पुत्रा जायते तस्य निश्चीतं ॥ ८६ ॥ लज्जा तृती ये भवने शनी च द्रौ पदा
 स्थितौ ॥ सामवर्ग सदा बालो भातु हिन श्वरा यते ॥ ८७ ॥ लज्जा तृति ये भवने रा
 पुको पदा सशि भातु ही नो भवे द्वा लो लक्ष्मि वा न सि जायते ॥ ८८ ॥ लज्जा तृति ये
 भवने पंच मेवा धरा सुत ॥ श्री यते पुत्र दु खे न नारी वा पु रु धो पि वा ॥ ८९ ॥
 लज्जा सप्तम गेह स्थो यदि भुक्नो बलि भवेत् ॥ कन्या दयं च पंच पुत्रा धनवान् पि जाये
 ते ॥ ९० ॥ सीरु लज्जा पदा भुक्नो शनी वी पी वी वस्थित ॥ तत्र जात स्य बाल स्य ने वना शत्रु
 जायते ॥ ९१ ॥ भुक्नो य मीरि के च द्रो च ते भो मीरि १२ पौराणी ॥ ग्रह दोषेण ते ज्ञाना मन्त्र
 ता ज्ञत यत मी ॥ ९२ ॥ भुक्नो त मी जन्म वै शी स्थाने सई दु है ॥ मन्त्रु न्ये भु च के

ज्ञानचंद्र ॥ देवकार का लघुग्रह च ॥ २३ ॥ सुखी केंद्र राज से वि वैश्य हति मो शाको ॥ सख वक्रा
 ॥ ७ ॥ कुजे भुरे कुवेत्पाथ को भवेत् ॥ २४ ॥ खानु का मेर तो नी त्याद व बुद्धि न से गु रौ ॥ भुके
 विद्यार्थ संपन्नो नी जसे वि श नै ॥ २५ ॥ इति राज योग केंद्र च सौ म्या घादि पृष्ठ
 भा ॥ जफाफ क लात्रे च मनु बरा शो राज भवेत् ॥ २६ ॥ स्त्री वक्र को ग पुता नी संप्र शा
 ता च सु पुत्री ली च ॥ २७ ॥ ध्यो वी ली जे यदि तुंग संस्थो ला भा श्री तो देव पुरोहित
 श्व न रं ॥ २८ ॥ वनिता प्र हं से तादा पु सी ज्ञान वाते ह नु मो ॥ २९ ॥ ए को पी
 जिवो भवर्ग भुव केंद्र यदा चं ज्ञा जो र्द्वी त श्व राजी भवेत् ॥ स्त्री स च ना स पुजा
 रुवा चो ता पी न ती तं वा वं व ॥ ३० ॥ क को द ये स पु म जे य तं नी वे न ह ये पी पु ॥ राज ॥
 रा दे हे विद्या धरि वा च भ वे प्र धा ना रा नि ग तारी व ह पु व पो वा ॥ ३१ ॥ व द्ग ॥ ७ ॥

भुद्धी स्त्री भी रेवा नि चतुर्भी रं शै श्व तथै का द लो ॥ पंचादी भी दे व वि मा त ना ना
 त्रै लो क्य ना था प्र सु दा त दा ह्य त ॥ ३२ ॥ ला भा श्री त शि त क रं ॥ ३३ ॥ श्व क ल व र ग ॥
 सो म सु तो न यु क्त जी वे न ह छो भ व ती ह रा ना र्या ता ध रा या स क लौ लु ता वा ॥ ३४ ॥
 फ ल स्त्री पु स यो तु ल्यं जा त कै को तु स प्र मे सो भो ज्य च द ल ज्ञा श्व व पु रा कृ ती ह य ते
 ॥ ३५ ॥ इति स्त्री राज योग कर्म स्थाने नी ज क्षे त्र भौ म भुक्त बुद्धे पु त य दी रा रु र्ज वे त ल्य क्ष
 रो वृ द्धि क्षा रो क्ष य ॥ ३६ ॥ हो रा या द्वा द रो रा शो स्थी तो यदि दी वा क र ॥ करो ती द क्षी रो का
 रां वा स ने वे च चं द मा ॥ ३७ ॥ भौ म क्षे त्रे य दा जी वो जी व क्षे त्रे च नु स त ॥ द्वा द शो व त्स रं मृ त्यु
 बाल द स्य न श स य ॥ ३८ ॥ ध न स्था ने य दा भौ म श नै श्व र स म ची त ॥ स ह जे च न वे द
 ज्ञा ता त स्य न जिव ति ॥ ३९ ॥ चतुर्थे च य दा रा रु र्ज ये चं द्रो ब मे वी वा ॥ स य ए व म वे

लज्जवदु॥ मृत्युशंकरे यदि रक्षति ॥ ७ ॥ अथ मस्थो नीशा नाथो केन्द्रे पापेन संयुतं ॥ चतुर्थे
 ॥ ८ ॥ चपदागद्वर्षमेकं सजिवति ॥ ८ ॥ पाताले चोरो पापो द्वादशे च यदा स्थितः ॥ पीतं
 मातरं हन्ती देशदेशांतरं व्रजेत् ॥ ९ ॥ पंचमस्थो नीशा नाथो त्रींशो च वृहस्पतिः ॥
 दसमे च महिषु नृपरा मायुसजीवति ॥ १० ॥ षष्ठस्थाने यदा क्रूरसह जेस प्रमेतथा
 पंचमे भवने जीवो नाच जातस्तदा भवेत् ॥ ११ ॥ लज्जे च ते व्यये कार मृत्यु च जाय
 ते वीर्यया मार्गे वधो स्पष्टा दसाष्टमवासरे ॥ १२ ॥ षष्ठे च भवेत्तमो मेस प्रमासिही
 कासुत ॥ अथ ये च यदा शैरीभा र्थात् सप्तमं जिवति ॥ १३ ॥ तीर्थं ते च दीनां ते च
 लज्जस्थाने तथैव च ॥ चराशे च यदा जातसो म्यजातशिभुर्न वेत् ॥ १४ ॥ शीघ्रस्था ॥ रास ॥
 जे यदा चंदो लज्जे स्थाने शनैश्चर ॥ कुजाश्च सप्तमस्थाने पीता तस्य नृती ॥ ८ ॥

लोन यते

वति ॥ १५ ॥ बालस्य जन्मकाले च अथ मस्थ शनैश्चर ॥ पापाहयो नासक स्याद न्य
 थल्लेशदायक ॥ १६ ॥ कुरैह्यो जन्मलज्जात् षष्ठे वाप्यष्टमे तु च ॥ चतुर्विंश
 वे मृत्युशंकरे यदि रक्षती ॥ १७ ॥ कुराश्चतुर्विंशे युतथा कुरोधने पीच ॥ दा
 रिद्र्यमार्गे जानीयात् स्वपक्षस्त्रक्षयं कर ॥ १८ ॥ लज्जस्थाने यदा जीवो षष्ठमस्थाने श
 नैश्चर ॥ राहुश्च सह जे स्थाने तस्य माता न जिवति ॥ १९ ॥ सप्तमे भवने तौ मचाष्ट
 मे मार्गे वो यदा ॥ नवमे भवने तु व्योस्वला पुल्लस्यजा ॥ २० ॥ क्षीणचंद्रो यदा
 लज्जे पापचाष्टमकेन्द्रे ॥ स्मरेत् लज्जपति पापो युक्तः स्यतदा शीघ्र ॥ २१ ॥ क्षी
 णचंद्रो द्वादशस्थ पापाग्ने स्मरेत् ॥ भुजश्च राहीते केन्द्रे शीघ्रं नश्यती जातकः
 ॥ २२ ॥ दसमस्थे दीवानां थापापैर्वक्रुनीरीक्षीत ॥ मेघवृश्चैककर्मस्य सद्यो

लम्ब वद म सुप्रदाभवेत् ॥ २३ ॥ राहु जी वोरि पक्षेत्रे लजे वाथ चतुर्थ ॥ त्रये वा शेत
 ॥ २४ ॥ थाव वपुत्रस्थानं च वी शयेत् ॥ २४ ॥ अथ मस्थौ प दाभौ मस्त्री कोणा जी च जो
 रवि ॥ स शीघ्रमेव जात स्यात् ॥ २५ ॥ जी वी च द्वां वी त ॥ २५ ॥ सी हे भौ मस्तुले
 शौरी के न्या या च यदा सी त ॥ सी शु ने च यदा राहु ज नित स्य नश्यती ॥ २६ ॥
 लजे कुर स्वभ वने कुर पाताल गो यदा ॥ दशमे भवने कुर कच्छ जिवति जात क
 ॥ २७ ॥ सप्तमे भवने भानु क मस्थौ जनि नदन ॥ राहु र्व ये च त स्यै वपी ता क छे
 न जी वति ॥ २८ ॥ वी कोणा के दु जा पा पा शुभारं कु वपा रि जा सु र्यो दय प्रसुत स्य
 हं रति रव लु जी वन ॥ २९ ॥ सप्तदेव ये च सह जे मध्ये कुरा यदा गृहा ॥ त दा जात ॥ रा म ॥
 सवाल स्य शरी रे क च सा दी शेत ॥ ३० ॥ के न्या या च यदा राहु शुक्रौ भौ मसमि ॥ २ ॥

सथा ॥ तव जात स जायंते कुबेरादधिकं च नम ॥ ३१ ॥ कुरल जे भवे जात तत्त्वा
 मो कुर वेष्टी त ॥ ग्राम वा तो भवे तस्य शरी रे क च सा दी शेत ॥ ३२ ॥ सह जे सह
 जायो शेल जे पुत्रे धने पी वा ॥ जायते वत दावा लो यदी जातो ने जी वति ॥ ३३ ॥
 के न्या मी यु न गो राहु के दु बधे ये ये यदा ॥ वी कोणा च यदा जातो दाता भौ लो
 जी राम य ॥ ३४ ॥ एक पा पो मस्थौ पो राहु क्षे त्रे यदा भवेत् ॥ राहु ला वी दी तो
 ब धी मार य तो ववाल क ॥ ३५ ॥ भौ म भानु म्भ मंद अ राहु क्षे त्रे ब धे ये यदा ॥ ये मे
 नार दी त प्ये व वी मा वं न जी वति ॥ ३६ ॥ वक्रि रा नी भौ म गृह के दु बधे ये ये पी वा
 कु जे न बलि ना द म्पो रु ति वधे यो शी शु ॥ ३७ ॥ राहु व ये वी मी ह्ने के लु ह्ने
 ये चतु र्थ य ॥ ह्ने च गुरु शुक्रौ यां ग्रा यु दी प्ये स जिवति ॥ ३८ ॥ चंद्रा मंगलौ

लज्जतचंद्र पुत्तोजन्मकालेयदाभवत् ॥ तस्य जातस्य गेहं तुल दम्भी नैव विभुं चिति ॥ ३८ ॥
 ॥ १० ॥ अथ मेरी चंद्रसद्यो मारणाय पापसंहर ॥ अथ मेरी शुभदृष्टे वरै मेरी शुभद
 ॥ ४० ॥ अथ लज्जतचंदनी सायां चक्र हन जाये च बासो ॥ अथ लज्जतचंदनी शुभ
 दानशी शुभं तीतातवत् ॥ ४१ ॥ लज्जतचंदनी को गो घुने च बाय पाप पुत शिशि ॥
 शी शुभति नदृष्ट अथ वलवद्री शुभ गेह ॥ ४२ ॥ सप्रमेच च नरत्न वमाप पुमा
 तो स्थिति ॥ करोती मां चंद्रमा ना शं बालक स्य न स राय ॥ ४३ ॥ क्षीण चंद्रो य
 दाल गते पाप के दे सुसंस्थिता शुभ ॥ मे भवने वा पीत दा मृत्यु शी शोभते ॥ ४४ ॥
 रानी राहु कुजै पुत सप्रमे भवने शशी ॥ सप्रमे दी वसेहं ती मासे वा सप्रमे शी शु ॥ ४५ ॥
 ॥ ४५ ॥ न पश्यती राशिलज्जतमध्ये वा सौ प्रशुक पौ ॥ ताते परे दान जन्म स्य भौ मते ॥ १० ॥

स्थितिश्चोः यदा मातुर्भूलक्षेत्रे यदा क्षान्तिः ॥ हृदये वल्लरे मृत्युः तस्य जातस्य जायेत ॥ ६५ ॥ उधभौमे यदा लगे
 अथ वा यदि निहतिः ॥ तत्क्षणे यो र्कमाचरुत्तपदो वः न स्यतः ॥ ६६ ॥ अथ लज्जतचंदनी चंद्रो यदा व
 धः ॥ पापकोचः अनुवर्षे मारयन्मवबालकं ॥ ६७ ॥ अथ मस्येयदा गङ्गा केन्द्रस्थाने च चन्द्रमा ॥ मद्य
 कभवेत्मृत्युः बालकस्य न स शयः ॥ ६८ ॥ सप्रमे भवने राहु मज्जक्षेत्रे यदा भवत् ॥ प्राप्ति चोदो सेवैतस्य मृ
 त्यु न संसे ॥ ६९ ॥ हृदये यदा चन्द्र पापमावह मे गेह ॥ एक मासे भवेत्मृत्युः तस्य बालाप्ति निश्चितं
 ॥ ७० ॥ जन्मस्थाने यदा राहु अथ स्थाने च चंद्रमा ॥ मृप स्मारी तदा बालो जायते नात्र
 स शयः ॥ ७१ ॥ मार्गवेन पुत अथ अथ मगतो भवेत् ॥ मीदा जनी कुक्षी रोगी च हि नागी
 पी च बालक ॥ ७२ ॥ अथ लज्जतचंदनी चंद्रो यदा पुत अथ लज्जतचंदनी वी घदो घेण बाल स्यतदा
 मृत्यु अजायते ॥ ७३ ॥ भानना सं पुत अथ अथ मगृहो यदा ॥ राजदो घेण मृत्यु
 वी सी ह दो घेण चाभवत् ॥ ७४ ॥ प्रकोपी यदी मुती स्यात्त जन्म काले दी वा कर ॥ स्था

॥ १२ ॥ लज्जव ॥ नही नो न वेद बाल सो क संता पप्रिडीत ॥ १५ ॥ द रा म स्यो य दामौ म रा उधे ॥ स्थित ल
 दा ॥ मी य ते त स्य बाल स्य प्रिता शी घु न सं रा य ॥ १६ ॥ ल जे ॥ मे य दा रा ॥ अ यु को
 ही ती ॥ ति ॥ द रा हे जा य ते त स्य बाल स्य म रा ॥ १७ ॥ रा नै ॥ अ र ॥ ल ॥ लो कु म
 म को य दि व्य यो भ वे त ॥ ल जे ॥ छ ॥ तृ ती य च तारी ॥ न जा य ते ॥ १८ ॥ ल जे ॥ च ल ॥ मे ल
 यो पु त्री त था ॥ मे ॥ ए का द शे मार ग वे च द मा स मे कं न जी व ति ॥ १९ ॥ अ ने ॥ गु ॥ सी ह
 के यो भौ म थु क ॥ अ स पु मे ॥ अ ल मे र वि चं दौ च ॥ अ क्ष स्या त यौ व ने धी ज ॥ २० ॥ अ व मे द
 रा मे च द स प्र मे च य दा सी त ॥ पा पे पा ताल स स्थ च व रा क्ष य क रो ना ॥ २१ ॥ भ्रा तृ स्था ने प
 दा जी वो ला भ स्था ने य दा रा शी ॥ स लो को गृ ह म ॥ अ स्थे जा य ते कु ल दी पी क ॥ २२ ॥
 सी हे ल जे ॥ य दा भौ म पंच मे च ती रा क ॥ अ म स्था ने य दा रा कृ स जा त कु ल दी पी क ॥ २३ ॥
 २३ ॥ क पा पो य दा ल जे पा य ॥ अ को र सा त ले ॥ जा य ते चा द्वि ना ला भ्या स जा त कु ल ॥ २४ ॥

दी पी क ॥ २४ ॥ ल जे वा स प्र मे भौ म पंच मे च दी वा क ॥ जी वे द र वा व म ॥ अ पि वी र वा त स न
 स रा य ॥ २५ ॥ आ दो मु ल म ॥ अ ॥ अं ती सु स्तु र्ग ड ना डी का ॥ अ प ल ॥ अ ॥ अ च रे व ति ना मं ते
 पंच ना डी का ॥ २६ ॥ इ ति गं ड यो ग सं ध्या रा त्री दी वा भा गे गं ड यो गे ॥ अ वं शि ॥ अ ॥ अ त्म ने मा त रं
 जा तं वी नी हं ति प था क म ॥ २७ ॥ या त्रा पां स्या च्छौ र भ यं वी वा हे म ॥ अ ॥ अ व च ॥ अ न ने पि त रौ हं
 ति व द त्ते च वृ ह स्ति ॥ २८ ॥ गं डारी ॥ अ ॥ अं कुं मं चं द न कुं गो रे च त स म न्नी तं य ते न मी श्री
 तं ह त्वा च तृ ती क ल शै ल त ॥ २९ ॥ स ह अ शी र्वा म वे रा बाल के स्ना प ये दु ॥ पी ति ॥ अ
 तं दी वा जा तं मा तृ पु च क र्ण च रु क्षां ये न सु व ग्र ह जा प्यं च को र ये त ॥ ३० ॥ स्ना प ये त पी
 तृ भा तृ ॥ अं सं ध्य यो र भ यो र पि ॥ का ल्प पा त्रं च तै पु रू द द्या इ जे प शी त ये ॥ ३१ ॥ अ ॥ अं
 वा पा च मु ले पी शा ती रे वं वि धी य ते ॥ ३२ ॥ गं ड शा ति न ल जे मी दुं च ग र नी रे क्ष तं
 न वा श शा क र वी र्णा स म न्नी त ॥ ३३ ॥ स पा प को की र्णा पु थ वा श शी पो र्णा जा त प्र व द ती ॥ नी

॥ लज्जचं ॥ श्री प्रह्लादो वे गते चंद्रे तदुक्ते वासुदेव स्मृति ॥ ४ ॥ तदेकं शोभनं वा जायते च प्र
॥ १३ ॥ रास ॥ ५ ॥ श्री मध्वे वे पदा जातो मुर्ते कुरगुहो भवेत् ॥ वर्षमध्वे भवेत् नृ सुवालक स तश
सम ॥ ६ ॥ श्री न चंद्रो दशस्थो दुख द पापवी क्षीत ॥ करोती वी पुलं केश सख मस्थो
यदा शनो ॥ ७ ॥ दशरो च यदा चंद्र खले पाप ग्रहो भवेत् ॥ अल्पा पुत्र्य सदारो जी जायते जा
त को ध्रुवं ॥ ८ ॥ दशमे भवते स दु पीत ॥ मा वी प्रमि डी क ॥ दशरो व तरे तस्य बाल स्य मर
णं क्व ॥ ९ ॥ रि पुत्र्या ने पदा पावे व्यपस्थाने च चंद्र मा ॥ चतुर्थे मंगलो यस्य माता तस्य
न जि वति ॥ १० ॥ चतुर्थे मातृ द पापो दशमे पीतु हा भवेत् ॥ स प्रमे भवते पाप पीतु मा वी
मा रा क ॥ ११ ॥ दशरो रि पुभावे च यथा कुर व्य कस्थित ॥ तदा मातुर्न यं वी द्या चतुर्थे दशमे
पीतु ॥ १२ ॥ उ चो वा प दी वा नी च स प्र मस्थो यदा रवि ॥ तदा जातो मो हं त्या शु मातरं ना व संश ॥ रा म ॥
म ॥ १३ ॥ ना ग र जी ह सी दु ॥ १४ ॥ जा ती १२ ॥ दु द मा १ ॥ १५ ॥ शु श्री २३ ॥ रा रा २० ॥ वृ ती १८ ॥ १३ ॥

श श्री २४ दी क १० चे स जा यं शत तु ल्या दै वी वी व्य स ॥ ४ ॥ ल ज्जे श नी र्द दामो मो रा
उ सु र्ग श्रु ति त ॥ सं ता पो र क्त दो ष स्य सर्व सौ म्य श्व रो ग कृ त ॥ ५ ॥ के द्रे शु भो द य को
पी व ला वी श्र प्र का श क ॥ सर्व दो ष क्ष यं या ती दी र्घा पु श्र भ वे त् ॥ ६ ॥ शु र्क के द्रे य दा
च द्रो मी त्रा रोगु ह्णे क्षी त ॥ वी त वा न जा न संप न्नो जा य ते च त दा न ॥ ७ ॥ दु र्धो वा ना जी वो
वा पी के द्रे सं स्थी त ॥ ब लि ना मु दी तो री ण ना रा य ती सर्व कृ वं ॥ ८ ॥ इ ती शु भा शु भ यो ज री ष
द प्र थ मे मा से ३२ द्वा वी शे च ॥ उ षो द शे स प्र वीं श ती व र्ध च चतु र्गु णा शी तो मृ ति ॥ ९ ॥ द्वा वी
शे च द्वी ती य च व र्ध पी डी च मं ग ले ॥ चतु स प्र ती व र्ध णि स दारो जी सा जि व ति ॥ १० ॥ दु ष
वा रे ष मे मा से पी डा व र्धे त था ष मे ॥ पु र्ण चतु ष णि व र्धे त तो मृ तु र्ज वी व्य ती ॥ ११ ॥ गु रौ च
स प्र मे मा से षो ड शे च त था ष मे ॥ पी डा त त श्रु त य क्ता शी त ८४ व र्ध णी जी व ति ॥ १२ ॥
शु क वा रे च जा त स्य दे ह रोग वी व र्ज ति ॥ घ णी द्वा व र्ध च संपु र्ण प्री य ते मा न वो कृ वं ॥ १३ ॥

॥ लज्ज च ॥ शनौ प्रथममासे चोपे ॥ हृदय दशवत्सरे ॥ हृदय देहस्तदा जात शत ॥ १०० ॥ वर्षाणि जीव
 ॥ १४ ॥ ॥ १४ ॥ इति वारायु मी ॥ न भोगी मानी च को धो चरी तीलात ॥ पीता धो को
 रवे बोधनी कामी भवेत्तर ॥ १५ ॥ भोगी कामी शास्त्र वेत्ता गुणि मानी जीते द्यौ
 य ॥ वीद्या धी कशिल प्रसू जाय ते ही मवासर ॥ १६ ॥ सुख प्रीयो धनि कूर भुती
 स्मृती वीती दक ॥ अनास्ति को वेद ही नो भोगी न भवेत्तर ॥ १७ ॥ वेद शास्त्र
 क्रियायुक्तो यदा लु अय व कु भुत ॥ भयान्त का के ग पुक्तो जाय ते सुख वासर ॥ १८ ॥ वेद
 विजो ॥ नी होषी च पुत्र पौत्र धनानीत ॥ पुण्य वेत्ता गुरु बोध भवेत्तर ॥ १९ ॥ प्रवी भो
 गी धनि भुर रुपा लुर्व कुले वक ॥ देव जो पी जन भुक्त दीने भवेत्तर ॥ २० ॥ नी चा शक्त
 कृत्यु अ कु ॥ लो वंध विडक ॥ कृती काय ह रो रोषी जाय ते शनि वासर ॥ २१ ॥ इ ॥ २२ ॥
 ती वारा फलं नेत्र लोल सदा रो गी धर्मार्थ कृत नी श्रय ॥ पृथु जंघ कृत ज्ञ अवी कातो ॥ १४ ॥

राज प्र जीत ॥ २२ ॥ कामी नी च दया नंदो दाता भीतो जालादपि ॥ चडक मी मृ दु श्रान्ते
 मेष शौभ वेत्तर ॥ २३ ॥ भोगी दाता भुवी दीप्ति महा गर्भो महा बल ॥ रागी वीला सीते
 जस्वी सुमीत्र अ वृषे भवेत्तर ॥ २४ ॥ मी ॥ कया हृद लो लो द घालु म् ॥ धुन प्री य ॥ जंघ वी
 वीत क हृ रो गी काति भोगी धनि गुणि ॥ २५ ॥ गौरी दी र्घ पदु र्य कामे धावी च हृद व्रत ॥
 समर्थो उपवादी च जाय ते भी धु नेतर ॥ २६ ॥ कार्य कारी धनि भुरो धर्मि ह्यो गुरु वत्सल
 ॥ शी रो रो गी महा बुद्धि कृशांग कृती वीतम ॥ २७ ॥ प्रवा शशिल को पां धो वलो दु खी सुमी
 वक ॥ अनासक्तो गृहे च कर्कश शौभ वेत्तर ॥ २८ ॥ क्षमा युक्त स्त्री या युक्तो मद्यमा सरत
 सदा ॥ देश भ्रमरा शी त्म अशी तभी त समि वक ॥ २९ ॥ वी नयो शी घु को पश्च जन नी ज
 नव ह्यभ ॥ व्यसनी प्रकृते लो के सीं हौ रा शौभ वेत्तर ॥ ३० ॥ वी ला सी स जना ला दी सु
 भगो धर्म प्रीत ॥ दा ता वृक्षो कवी र्व ह्यो वेद मार्ग परा यण ॥ ३१ ॥ सर्व लोक प्रीयो नाद्य गं

॥ १५ ॥ धर्मासने रत ॥ प्रवाल शील लखी दुखी कं त्या जातो भवे न्तर ॥ ३२ ॥ अवस्था रो रा
 ॥ १५ ॥ गोदुखी पदु भाषी कृपा ली त ॥ चलाक्ष श्रु लल लक्ष्मी को गृह मध्य ती वी कम ॥ ३३ ॥
 वाणि ज्य दक्षो देवाना पुत्र को मो उव वसल ॥ प्रवासी सुह दामि लु लो जातो भवे न्तर
 ॥ ३४ ॥ बाल प्रवासी कू रात्मा श्रु पी गल लोचन ॥ परा र र तो मनि नी घा र स्व जने ज
 ने ॥ ३५ ॥ साहस प्रा प्रलेक्षी को जत न्ना मपि दु ल्पधी ॥ धु र्त श्रौ र क ला रं जी व श्रु की के जा
 यते न्तर ॥ ३६ ॥ श्रु सत्य धी पा पु र्क सा न्नी को जत नंदन ॥ शील्य वी जान संप न्नी धना
 घो दी व भा र्थ क ॥ ३७ ॥ मानी चरी त स प न्नी ललि ता क्षा भा र्थ क ॥ ते ज स्वी स्थित दु हे
 श्रु च नु र्जित कु ला न क ॥ ३८ ॥ क जने ह्ये व श स्त्री रां पं डी त पर दार क ॥ गी त न लाल
 नी गु ह्य पु त्रा यो मा व व स ल ॥ ३९ ॥ कृत ज श्रु क व र्ति च ग ज वा ध नि त्या जी सु ॥ मृ तु श्रु द ॥ राम ॥
 यालु र्ब दु व दु वा ध व ॥ ४० ॥ पी ची त त सौ र व्या श्रु मे करे जा यते न्तर ॥ कृत ज श्रु क व र्ति च ग ज वा धी ॥ १५ ॥

ने श्रु श्रु महि सादा सौ म्यो मा न वी द्या कृतो द्य म ॥ ४१ ॥ पु न्या य स्ये ह हान श्रु च नी मो जी
 स्व श क्तो त ॥ शालु र स कु नी नी ति कु मे जा ती भ वे न्तर ॥ ४२ ॥ गो मी र वी हित भु र यदि वा क्यो न रो त
 म ॥ को प न रु प री त जा नी गु रा थ्रे ह कु ल प्री य ॥ ४३ ॥ नी त स से वी शी द्य गामो गं ध र्ब कु रा ल श्रु
 भ ॥ मी न रा शौ स म स प न्नी जा य ते कृ व व स ल ॥ ४४ ॥ मे घे दी नो वृ घे मा ती प दु वृ द्धि श्रु म न्म यो
 कृ ॥ क र्के धृ ति सी हे कं न्या यां व कु मा य ये त ॥ ४५ ॥ तु ले श स्त्री म ल श्रु लौ वा पे पा प श्रु यो न
 र ॥ सु खे म कर कु ने च च तुर स्थी र धी र्दो ॥ ४६ ॥ इ ति ज न्म रा शी फ ल मृ मे घे ल गे स मु स न्नी श्रु
 डो म नी स को प क ॥ सु धी स्व ज न हं ता च वि क जी प र व स ल ॥ ४७ ॥ वृ थ ल ग न म बो लो को गु रा म क
 प्री यं व द ॥ गी त कृ ती ध नि लु ध श्रु र स र्व ज न प्रि य ॥ ४८ ॥ मी थ नो ज प सं जा तो मा नी स्व न
 न व स ल ॥ त्या जी भो जी ध नि का मी दी र्घ सु वी र म द क ॥ ४९ ॥ क र्के ल गे स मु स न्नी मो जी रा
 दु वी त र्द क ॥ स्व लो क मे ल्य प्र व श्रु सो त्या ही र रा वी क म ॥ ५० ॥ क न्या ल ग न म बो वा लो ना ना शा स्त्र

लज्जचै॥ वी शारद सोभापगुणसंपन्नसुंदरसुरतप्रीय॥५१॥ तुल लज्जोदये जातो सुधी सत्कर्म जी
 १६॥ वक॥ वी दानसर्वकला नी जो धना ध्यो धनपुजीत॥५२॥ वृश्चिकोदयसं जात रौप्य वा
 तती दुष्टधी॥ वी ज्ञान ज्ञातसंपन्नसुखै श्री वी गृही सुधी॥५३॥ च नु लज्जोदये जातो नी
 ती वान्धुमिवान सुधी॥ कुल मध्ये प्रधात स्य प्राज्ञ सर्वे स्योवक॥५४॥ प्रकरोदयसं जातो
 नीच कर्मा बहु पुज॥ लब्धो वी नक्षत्र लज्जो श्रवण कार्ये भुक्तो य म॥५५॥ कुंभ लज्जोद
 यो जात चलधी तो ती सौ हृद॥ परदार रतो नी संसृष्ट कार्यो महा सुखी॥५६॥ मी न लज्जे
 भवे वालोरत्न कांचन पुरित॥ अल्प कामो नी रक्त श्रुती र्व काल वी वी त्य क॥५७॥ इती ज
 न्म लज्ज फलं कुर संगीध नै ही न कुल सनाप कारक॥ व्यास नी सक्त ची त्त श्रुति पती
 थी घो नर॥५८॥ परदार रतो नी ससत्त्व शौच वी व जीति॥ त स्कार स्नेह हि न ग दी ती या॥ राम॥
 संभवे नर॥५९॥ अचेत नो ती वी लो नी हृद्य दुर्बल सदा॥ परदे वर तो नी संतृती या यां न॥१६॥

वे नर॥६०॥ महा भोगी च दाता च मी उल्लेखी च क्षण॥ च न सतां न पुक्त श्रव नु
 थी दधी जायते॥६१॥ व्यवहारी गुण ग्राही पी उमात्रो श्ररक्षक॥ दाता भो क्तानुप्रीती
 संचमी संभवे नर॥६२॥ नाना देश भोगी मित्र सदा कलह कारक॥ ती सज्जठर दोषी च व
 क्षि जातो भवे नर॥६३॥ अल्प दोषी च तेजसी सोभापगुण सुंदर॥ पुत्रवान गुण संपन्नो
 सप्रम्या जायते नर॥६४॥ धार्मिक सत्यवादी च दाता भो क्तो च वत्सल॥ गुणज्ञ सर्व कार्य ज्ञा
 श्राष्ट्र प्रो संभवे नर॥६५॥ देवता श्रधक पुत्री वनी स्त्री प्रजन मानस॥ शास्त्राभ्यास रतो नी
 सन वम्पा यदि जायते॥६६॥ दरी म्या सर्व धर्म जो देव से वी च पाल क॥ गुणि धानि वेद वी
 जो वंपु वी प्री यो जन॥६७॥ एकादश्यां नो द्रस्य हे भगामी श्रुची भवेत्॥ धर्म ज्ञ श्रु
 वी वेकी च गुरु श्रु श्रुष का गुणि॥६८॥ चपल श्रपल ज्ञान सदा क्षीण स्व रूप न
 ॥ देव भ्रमण शील श्रवदा दशी जात को भवेत्॥६९॥ महा सीद्धि महा प्रा जो शास्त्रा

॥ लज्जचंद्र ॥ आसो जी ते द्री य ॥ पा कारी तो नी त्य त्रपो द र पां प्र जा य ते ॥ १० ॥ ध ना ख्यो धर्म शो
॥ ११ ॥ लश्च अस वाक्य पालक ॥ राज्प मान्यो य शस्वी च चतुर्द श पां नो भवेत् ॥ ११ ॥ पु त्तो मति
 पु त्तो श्च महामो जन लाल स ॥ उ ज्जल पदो रुर तश्च पु री मा भवेत् ॥ १२ ॥ स्थि रश्च प
 पर दे वी व को मु र्ध ॥ पा र्क सी गुरु मत्री च स ज्ञा तश्चो भो जं तं ॥ १३ ॥ इ ती ज न्म तो
 धी फलं वी श्च ज्ञा तो म नु जौ रूप वा न्मा ग्य वा भवेत् ॥ ज्ञा ता लं का र स प न्नो आ हा व
 द्वि वी शा र द ॥ १४ ॥ प्री ती यो जे स मु त्प न्नो यो धी तां व ह्नो भवेत् ॥ त त्व ज्ञा श्च महो त्सा
 ही स्था र्थि नी त्यं कृ तो द्य म ॥ १५ ॥ आ यु ध्मा न्ना म यो जे च जा तो ज्ञा नी धी ने क वी ॥ दी
 ध्यु त्त त्व संप न्नो पु त्त चा प्य प रा जी त ॥ १६ ॥ सौ भा ग्ये य स मु त्प न्नो रा ज मंत्रि स जा य ते ॥ १७ ॥
 नी पु त्तो सर्वा का र्ये पु त्त कु न्नो स दो त्सुक ॥ १८ ॥ सो म ने शो म नो बालो पु त्तु पु त्त कल त्र ॥ १९ ॥

वा न् ॥ आ नु र सर्व का र्ये पु त्त कु न्नो स दो त्सुक ॥ १८ ॥ अ ति गं डे च यो जा तो मा तृ हं ता भवे च्च म ॥
 जं डां ते बु च जा त स्तु कु ल हं ता प्र की र्ति त ॥ १९ ॥ शु क र्मी ना म यो जे च शु क र्मी जा य ते न र ॥ सर्व प्री
 शिल श्च रा जी रे भा जी गुरा धी प ॥ २० ॥ शु ले शु ल ल व्ध था यु त्तो धार्मि क रा त्र पार वा ॥ वी द्या
 र्थ कु श लो पु त्त जा य ते म नु ज्ञा स दा ॥ २१ ॥ धृ ती मा न् धृ ति या जे च की र्ति पु र्णि ध ना न्वी त ॥
 भा ग्ग वा न् सु ष संप न्नो वी द्या वा न् गुरा वा न् भवेत् ॥ २२ ॥ गं डे गं ड व्ध था यु त्तो व ह्नो लै शो म हा शी रा ॥
 रु त्त का यो म हा स्थु लो व द्ध भो गे ह्नु व्र त ॥ २३ ॥ वृ द्धि यो जे स्वरूप श्च व द्ध पु त्त कल त्र वा न् ॥ धृ त वा न
 ती भो ता च स त्व वा न पी जा य ते ॥ २४ ॥ बु ध यो जे च दी र्घा पु र्ण र्वे षा प्री य द र्श न ॥ स्थि र क र्मी ती
 श क्त श्च कृ व द्धु श्च जा य ते ॥ २५ ॥ व्या घा त यो जे जा त श्च सर्व ज्ञ सर्व प्र जित ॥ सर्व क र्म करो लो
 को व्या घा त सर्व क र्म सु ॥ २६ ॥ ह र्ष ह्ने जा य ते लो को म हा भा जो नृ प प्री य ॥ ह र्ष स दा ध नै यु त्तो वी

॥ लज्जवद ॥ द्याशास्त्रवीशारद ॥ ८८ ॥ वज्रयोगे वज्रमुचिः सर्ववीद्यामुपाय ॥ धनधान्यसमायुक्तो भवेत् ॥
 ॥ १८ ॥ लोवज्रवीजम ॥ ८९ ॥ सीधु योगे समुपन्नः सर्वसीद्धिद्युतो भवेत् ॥ दाता भोक्ता सुखी कांत शोका
 रोगी च मानव ॥ ९० ॥ धृतिपाते नरो जातो महाकष्टे न क्षीयति ॥ जीवेच्चैकाग्रयोगे न स भवे
 दुःखमो नृणां ॥ ९१ ॥ वीर्यान्नामयोगे च वीर्ये जायते नर ॥ वीरलाकायैकधाम्नी जोगी
 तनूत्यादीको वीर ॥ ९२ ॥ परिधेन नरो जात सर्वकल्याणमा जन ॥ महादेव स प्रो लोके स
 हावुद्विवरप्रद ॥ ९३ ॥ सिद्धियोगे सीद्धिदाता मंत्रसिद्धिप्रवर्तिक ॥ दीव्यनारीसमेतश्च सर्वसंप
 द्युतो भवेत् ॥ ९४ ॥ साध्वे मानसिका सिद्धिर्बिषयशेषसुखागम ॥ दीर्घसुखप्रसिद्धश्च जायते
 सर्वसंमत ॥ ९५ ॥ शुभेशुभशतैर्द्युक्तो धनवानपी जायते ॥ वीजानशास्त्रसंपन्नो दा ॥ राम ॥
 तावाह्यगुणैक ॥ ९६ ॥ शुक्ले सर्वकलायुक्तः सर्वार्थज्ञानवान् भवेत् ॥ कृत्वा तन्मतापी शु ॥ १८ ॥

रधानि सर्वजनप्रीय ॥ ९७ ॥ ब्रह्मयोगे महावीरान्ते दशास्त्रपरायण ॥ ब्रह्मज्ञानरसो नी सप्त
 सर्वकार्येषु को वीर ॥ ९८ ॥ रोन्दे भूपकुले जातो राजा भवति वीरकृत ॥ अत्मा पुत्रश्च सुरविभो
 यी गुणावान् न पी जायते ॥ ९९ ॥ वैद्यतौ जायमानस्तु नीरुत्सा हो बुद्धीत ॥ कुवारापी
 जनैः प्रीती प्रीयात्प्रियतां नर ॥ १०० ॥ इति योगजन्यफलसुवधारणे करणे जातो मानो ध
 र्मरतसदाः शुभमंगलकर्मचक्षिरकर्मच जायते ॥ १ ॥ बलवारये नरो जातो तीर्थदेवादी से
 वक ॥ वीर्यार्थसौर्धसपन्नो राजमात्रश्च जायते ॥ २ ॥ कौलवारयस्य जातस्य प्रीती सर्वजनैः स
 ह ॥ संगतीर्भविष्यति ॥ अमनवश्च प्रजायते ॥ ३ ॥ तैलले करणे जातसौभाग्यधनसंयुत ॥ स्नेह
 सर्वजनैः साद्विचीवीग्राणि गृहाणि च ॥ ४ ॥ गगनैः कृषीकर्मचिगद कार्यपरायण ॥ पद्म
 म्भवां दीनं तच्छलभ्येते च प्रहोयमे ॥ ५ ॥ वनीजे करणे जातो वागी जे नैव जीवती ॥ वांक्षी

॥ ल ३ न च ॥ संलभते लोको दे शान्तराशागमै ॥ ८ ॥ प्र शुभारंभशी लश्च पर्यातरतसदा ॥ कुशलो वी व
 ॥ १९ ॥ कार्येषु वीर्यास्येकारणो भवेत् ॥ ७ ॥ शकु नौ च करणौ जातपायि कादि की या ह नी ॥ यौ च
 धा दी बुद्ध्या अभि वक्तृनिश्च जायते ॥ ८ ॥ कारणे च चतु पदे देवद्वि जरतसदा ॥ गोक मी गो
 प्रभु लोक श्वतुष्यदा चि की त्सक ॥ ९ ॥ नागे च करणौ जातः स्थावर प्रीती कारक ॥ कुरु ते दा रु
 शां कर्म दुर्भगो लाल लोचन ॥ १० ॥ की सु द्रु करणौ जातः शुभ कर्म रतो नर ॥ तृप्ति पुत्रि च मा
 गं लो सिद्धीं वलभते सदा ॥ ११ ॥ इति करण जन्म फलं पी शुनश्च पलो दुष्ट पाप क मी नी
 रा क्तो ॥ परे या व स नै स क्त श्वौ रश्च प्र मां शके ॥ १२ ॥ उ स न्नं प्र न वो मो क्तो संग्रामे वी ज
 त गृह ॥ गं धर्व प्र म दा स क्तो धी ती मां शे च जायते ॥ १३ ॥ धर्म दो स त्प दो वा प्री स र्द ॥ राम ॥
 शा स्त्र स ए व च ॥ सर्व च देवता भक्ति तृती यां शे च जायते ॥ १४ ॥ चतु र्था रो मि जा ॥ १५ ॥

तस्य दीक्षीतो गुरु भक्ति मान ॥ एत्किं ची व्रा त्त गो वस्तु तत्सर्व लभ वे च स ॥ १५ ॥ सर्व ल धरा संप
 न्नो रा जा भवति वी श्रुत ॥ दी दी युर्वि पुत्रश्च जायते पंच मा स के ॥ १६ ॥ स्त्री नी जति शुभी हि
 नो वृ ह मा या न पुं स के ॥ अर्थ च स मा दी च व या रो जायते नर ॥ १७ ॥ वी का तो भती मो न् शु
 र संग्रामे च पर जीत ॥ म हो त्सा ही च स तो री जायते स प्र मां स के ॥ १८ ॥ कृत न्द्रो म त्सरो क र
 क्तै र्मा धी व रु प्र ज ॥ फल काले परि त्पा गी जायते चा रु मां स के ॥ १९ ॥ की या सु कु री
 लो द द्य सु प्र ता पी जते दी य ॥ भू त्यै श्वा वे छि तो नी स जायते न व मां स के ॥ २० ॥ इ ती ज न्म
 रा शी न वां श के फल ॥ सु दा रो दा न शी लश्च म ति मा स व ल स दा ॥ २१ ॥ अ ल रो जी मा हा
 प्रा जो न रो दे व रा णो भ वेत् ॥ मा ना ध नी दी शा ला क्षी ल क्ष वे क्षी ध नु दु र ॥ गौ रो कौ र ज ना
 ल डा दी जा य ते मा न वे ग रौ ॥ २२ ॥ उ न्न रा णो भी व रा णो कारः सर्व दा क ली व द्ध म ॥ पु रू षं
 दु स हं वृ ते प्र मे ही ग क्ष से ग रौ ॥ २३ ॥ इ ति ग रा फलं रूप यौ व न संप न्नो दी र्घ सु व म दो ॥
 ॥ २४ ॥ की या यु क्त का का मु क्त श्च शी शी रे जायते नर ॥ २४ ॥ म हो य मी म न स्वी व रु

लज्जानं कायं कृतं ॥ न तादृशासाधो वसते जायते नर ॥ २५ ॥ गुणवान्मोक्षयुक्तः
 श्रान्तपुण्यो जीतंदोग ॥ कुशलौ धातुकादी च वर्ष्वा काले भवेन्नर ॥ २६ ॥ वा
 शिज्यकृषी हती श्रद्धा तथा ससमद्गोमात ॥ ते जस्ती बहुमात्र श्रान्तपुण्यो जायते
 भवेन्नर ॥ २७ ॥ बहुवीर्यो गतिर्न जया मयुक्त ॥ सौख्यमीदृशं पादादौ लोभीह
 हं मते नर ॥ २८ ॥ इतीह तु फलं ॥ गुणैश्च दत्तं श्रीमान् सौख्यं विवशुशास्त्र
 वीत् ॥ कुशली जानसं न्नश्रुलं नदी भवेन्नर ॥ २९ ॥ नमो रीदु नो नो मुषं
 सिद्धे विवज्जो ज्जीत ॥ जायते च परं पुंश्च कुरु पक्ष भवेन्नर ॥ ३० ॥ इति पक्ष
 फलं ॥ रूपकं गुणं लोभं न प्रतापी जने श्रान्त ॥ सर्वसौख्यं समाप्ती जा
 यते चोत्तरायते ॥ ३१ ॥ कृष्ण कर्मा नो नो नो गोमही स्यादो यत्तं नो जी भवे

राम
 २०

जनो वादी जायते क्षाक्षिणायने ॥ ३२ ॥ इतीह यणफलं ॥ महाधन्वी महोग्रश्च तु
 गम्भीरभास्करे नर ॥ सुमुखो गामुहाभोगी धनिश्चंद्रो जायते ॥ ३३ ॥ उच्चभौमे शुभं पुत्रश्च तेज
 स्वीर्गर्भी नर ॥ मेधावी हठवाक्यश्च कलाख्ये श्रुतौ भवेत् ॥ ३४ ॥ राजपूज्यश्च वी
 र्या नो वीद्या नार्थो गुणैर्नर ॥ उच्चैश्चुक्ते वीलासा च हास्यगतिना दी संयुत ॥ ३५ ॥ लुप्तो भा
 नुपुत्रे च चक्रवर्तिधानी भवेत् ॥ राजलक्ष्मणी योगश्च राहशनी समस्त ॥ ३६ ॥ इ
 तीह तु फलं म ॥ धनिसुखी कार्यवीर्यवीर्यो कोणसे दीवकै ॥ चन्दे धनिश्च मोक्षो न
 भौमे शुभे दयस्वल ॥ ३७ ॥ उच्चैर्कोणयुक्ते श्रुतौ सुखो पहनम ॥ मंदे नरो धनैर्गुणै
 महाशुभं कुलंधर ॥ ३८ ॥ इतीह तु फलं म ॥ स्वग्रहस्थे रवौलाको महोग्र
 श्रुतौ दीयमी ॥ चन्दे धनिरत साधुर्भनस्त्री रूपवानपी ॥ ३९ ॥ स्वग्रहस्थे कुजे वा
 पी श्रुतौ पलो धनवानपि ॥ उच्चैर्नाना कलाभीश्च पंडीतो धनपूति ॥ ४० ॥ ध

॥ लज्जतच ॥ नीका ॥ तीहा श्वसुवेष्ट स्वप्ने गुरौ ॥ स्फीत कवीवलः शुक्रौ शनौ मा
 ॥ २१ ॥ स्वीदीजन ॥ ४१ ॥ इती स्वगृहफलम् ॥ सुर्यमीउगृहे रषात शास्त्रास्थि
 रसौ हृदः चन्द्रो भाग्यगुण ॥ चतुरो धनवानपी ॥ ४२ ॥ भौ मे शास्त्रौ घ जीवी
 चतुर्धेरूपधनानीत ॥ गुरौ माउगृहे पुज्यसतां सत्कर्मसंगुत ॥ ४३ ॥ शुक्रमी
 उगृहे लोको धनि बहु जनप्रिय ॥ शनौ पण्डितो गीतकु कर्मती रसो भवेत् ॥ ४४ ॥
 इती माउ गृहफलम् ॥ नीचे सुखे भवेत्पुष्पावां च वैवर्जितो नर ॥ चन्द्रो रोडी
 स्वल्पपुण्यो दुर्भगो पिब जायते ॥ ४५ ॥ नीचे भौ मे भवे नीचकुत्सीत य स मातु
 र ॥ उधेक्षु डो व धुवे रो गुरौ दीनो मलानीत ॥ ४६ ॥ भुक्ते नीवम ॥ दारः स्वतंत्रशी ॥ रस ॥
 लवर्जित ॥ शनौ का हो दीरद श्वग ता चारोती गार्हत ॥ ४७ ॥ इती नीचगृहफल ॥ २१ ॥

नीतं क २

समाप्तर ॥ सुर्यरी उगृहे नीस्वोती घर्षे पीडी तो नर ॥ ४८ ॥ चन्द्रे हृदयरोजी च भौ
 मे ते जा जने धन ॥ ४९ ॥ उधे शत्रुगृहे मखो वाक धनो दुखपी डीत ॥ जीवो च जाय
 ते लीवो नाथ वृत्ति भुङ्गीत ॥ ५० ॥ भुक्ते शत्रुगृहे मलुकु बुद्धी दुखी तो नर ॥ शनौ व्या
 धी र्थ शोके न संतापो मिलि नो भवेत् ॥ ५१ ॥ इती री उगृहफलम् ॥ स्वरूपा शुभयो
 दक्षः सुलकायो महा धनि ॥ आश्वी नी सभवे लोकी जायते जन बह्वधम ॥ ५२ ॥ अ
 री जी स्वल्पवादी च सप्रमाण द्रव्यत ॥ हरणो जायते लोक सुखि च भति मानवी
 ॥ ५३ ॥ रूपरा पापकर्मा च क्षुधा लुनीत्पि पी डीत ॥ अकर्म कहते ॥ इती का
 सेनो जन ॥ ५४ ॥ धनिकते जे मेधावी कृपया न्याय्य वद स स्व वा दो स्वरू

ताजवं ॥ ॥ २२ ॥ पञ्चरोहीर्षा जायते नर ॥ ५५ ॥ चपलश्चतुर्द्वीर कूरका मासक मिकुत ॥ अहं
 काशे परदे यापु जेवति माव ॥ ५६ ॥ कृत जोग विसो ही नोनर पापरत सह ॥ आ
 रानक्षत्र राहु तो धन धा नवी वर्जित ॥ ५७ ॥ देव धर्म धर्मै उक्तो बुद्धि युक्तो वी
 चक्षरा ॥ पुष्पा च जायते लोक शासं स्या शुभ ज शुभ ॥ ५८ ॥ सर्व नक्षत्र तां तश्च कृत धो वंच
 करतल ॥ कृत घृश्च कुक मा च श्लो या या जायते नर ॥ ५९ ॥ बहु मृत्यो धर्म मो जी पीतु भक्तो
 ॥ महो यमी च मुना थोर ज से वी मघा या जायते नर ॥ ६० ॥ स पीया प्रथमे भद्रा दती यच
 धन क्षय ॥ मातु पीडा तृती ये च चतुर्थे च र सो पीतु ॥ ६१ ॥ वी या जो धन स पुक्तो गंभी ॥ राघ ॥
 र प्रमदा प्रीय ॥ पूर्वा फाल्गुणिका जात लुखि पंडित पू जीत ॥ ६२ ॥ दांत श्रु रो मृ दुर्वक्ता ध ॥ २२ ॥

भुवे दार्थ पंडित ॥ उत्तरा फाल्गुणी जातो महा योद्धा जन प्रीय ॥ ६३ ॥ अ सत्य वचनो ध
 य सुशयो बंधु वर्जित है ल जातो नर श्रौ रो जायते पर दाक ॥ ६४ ॥ पुत्र दा पुत सुहो
 धन धान्य समन्वीत ॥ देव वासरा भक्त श्रु स्वातर्ज जायते नर ॥ ६५ ॥ अती लघु ती
 मानी च नी सुर कलह प्रीय ॥ वी शाशाण नरो जात वेश्या जन सो भवेत् ॥ ६६ ॥ पुत्र
 धार्थ प्रवासी च वंधु कार्यो स दो यमि ॥ अ नुराधा नवो ला क सदा हृष्ट श्रु जायते ॥ ६७ ॥ व
 रुमीत्र प्रधान श्रु क वी दांतो वी चक्षरा ॥ ज्येष्ठा जातो धर्म रतो जायते श्रु द्रु जीत
 ॥ ६८ ॥ स्थिर रो जी च मानी च धन वा श्रु सुखी भवेत् ॥ तृती ये च द्विती ये च सु लप
 रित् भवेत् ॥ ६९ ॥ आये पाये पीतु पीडा मुले मातु द्विती ये च तृती ये च न हानी च चतुर्थे सु
 ख संपद ॥ ७० ॥ दृष्ट मा जो पकरी च भाग्य वा श्रु जन प्रीय ॥ पूर्वा साठे नरो जात स

॥ लज्ज चं ॥ केलार्थवीचक्षा ॥ ७१ ॥ बहुमीजोमहाकार्यो धार्मी कोवी नथि सुखी
 ॥ ७२ ॥ ३२ ॥ उत्तराशाढसंभृत श्रु श्रुवीज पीर सो ॥ ७३ ॥ कृत ज्ञ श्रुभजोदासा सर्वदा
 रोगसंगुत ॥ श्रीमान्बलसंगुतो भवरो जायते नर ॥ ७४ ॥ जीतपी यो वंधु मान्यो
 मरत्तौरलेकृत ॥ जातो नरो धार्मि क्काया मेक शत पीत विवेत ॥ ७५ ॥ कृपणो धन
 पूर्ण श्रु परदारो पसेवक ॥ जात शत श्री साया च जातो नति मानव ॥ ७६ ॥ गौर ससत्वीध
 र्म जश दुधा ती च गामर ॥ उत्तरा ना जातो नर साह सी को भवेत् ॥ ७७ ॥ संपूर्ण श्रु
 चीर्दक्ष साधु श्रु रोवी चक्षा ॥ देवति सभ वोलो को धन ध्या न्यै रलंकृत ॥ ७८ ॥ इती
 जन्म नक्षे ज फल म ॥ नदा ती थौ नरो जातो मा लो मारी च को वीद ॥ देवता भक्ति ॥ राम ॥
 नो य श्रु जातो य प्रिय यत्फल ॥ ७९ ॥ नदा ती थौ वंधु मान्यो राजसे वीधना ॥ ८० ॥

नित ॥ संसार भयभीत श्रु परमार्थ सतो स्थिर ॥ ८१ ॥ जया ती थौ राजपू ज्ञ
 उव गौशदी संगुत ॥ श्रु शत श्रु दीर्घा गु महावी ज श्रु जायते ॥ ८२ ॥ री ताति थौ
 वो स हि न पुमा दी गुरु नींद क ॥ शास्त्र जमत हंता चकारु श्रु नरो भवेत् ॥ ८३ ॥
 पूर्ण ती थौ धनै पुर्ण विद शास्त्रार्थ तत्व वित ॥ सत्यवादी श्रु दुर्के ता यदा भवति मान
 व ॥ ८४ ॥ इती नं द्या दी ती थौ फल म ॥ इती श्री सर्व सास्त्र वी शास्त्र दी काशी ना
 थ कृतौ लज्ज चंदो काया प्रथम परिच्छेद ॥ अथ दीती म परिच्छेद ॥ लज्जे चुर्ये ती
 ती व्र श्रु च चलात्मा स गतुर ॥ ने वरो जै पीडी तां जे जायते चारुणा कृती ॥ १ ॥ चुर्ये ध
 ने वी वा दी च बहु शा दु श्रु नी धर्त ॥ परापवादी रो र्थ श्रु कृत पु श्रु भवेत्तर ॥ २ ॥ त

॥ लज्जव ॥ तीसरे दीवानाये प्रसीदो रोज वर्जित ॥ उपतिश्व सुशील श्रव दयालु श्रव
 ॥ २४ ॥ वेन्तार ॥ ३ ॥ सुये चतुर्थे दुर्दुद्धी कृशा जं सुवर्जित ॥ अप्रभावो नो सुवर्जित ॥
 सगी भवेन्तार ॥ ४ ॥ पंचमे कंकदार श्रव दुष्ट प्रीतो लप प्रवक ॥ गुह्यरो जी सपाप श्रव
 जातको ही प्रजायते ॥ ५ ॥ अष्टमस्यो दीवानाथो कृतघ्नी ही न ज्ञान स ॥ शत्रुद
 ग्धो दृथा गमी बंधु ही न श्रव जायते ॥ ६ ॥ नवमस्यो रवी जात कुधर्मो भाज वर्जि
 त ॥ दशमे कंकदार श्रव प्रजायते ॥ ७ ॥ दशमे कंकदार श्रव प्रजायते ॥ ८ ॥ लामे सुये स
 उत्पन्नो नाना लाभ समन्वीत ॥ सात्वी को धार्मी को ज्ञानो रूपवान् पि जायते ॥ ९ ॥ रास ॥
 व्यये सुये नरो रोजी सत्व ही नो पृथा टना ॥ अससगी पुत्र दार भक्ति ही न श्रव ॥ २४ ॥

जायते ॥ १० ॥ इती सुये द्वादशभाव फलं म ॥ चंद्र लजे जड कुदु प्रसन्नो वन
 पुरीत ॥ स्त्री व द्रव्य भो धार्मीक श्रव कृतघ्न नरो भवेत् ॥ ११ ॥ धने चंद्र धने प्रणी नृष
 पुत्रा गुणान्वीत ॥ शास्त्रा गुणान्वीत ॥ सौभाग्यी ज्ञान प्रीती श्रव जायते ॥ १२ ॥ तृति ये वानि
 शाना ये धन विद्या दीप्ति युत ॥ कफा दी कंकारु क श्रव शत्रु रोजी जायते
 ॥ १३ ॥ चतुर्थे च नी शानाथे पुत्र दारा समन्वीत ॥ धनि सुखाय शी स्त्री बंधी द्या
 नपि जायते ॥ १४ ॥ सुते चंद्रे स तात श्रव रोजी कामी सदा भयि ॥ कवि मय र सै युक्तो
 वीज गी च भवेन्तार ॥ १५ ॥ षष्ठे चंद्रे वीत ही नो मृ दुकार्यो ती लाल स ॥ मंदार
 जि क्षी रा हृष्टि श्रव श्रु रोजी मन जो भवेत् ॥ १६ ॥ चन्द्रे व स प्रमे जाती दुखी कु

॥ लाउतव ॥ लिखवतुक ॥ रूपगोवकुवैरीच जायतेपरिदारीक ॥ १७ ॥ अहमेतारीकानाथेदी
 ॥ २५ ॥ न्योत्पणोसक ॥ प्रगलभश्चकशांगश्चपापवुद्धिनिवेनर ॥ १८ ॥ धर्मवन्देवा
 रुकातेस्वधर्मनीतसदा ॥ वीतदाजसतांश्चाप्यपापहीनश्चजायते ॥ १९ ॥ कर्मस्था
 नेसुधारसौवकुभाजोमहाधनि ॥ मनस्वीमहाज्ञश्चराजमानश्चजायते ॥ २० ॥
 लाभेचन्द्रेतामयुक्तप्रगल्भोवीगतोद्यम ॥ सुभागगामीतज्जालुप्रतापीभाजवा
 न्मवेत् ॥ २१ ॥ यथेच्छंष्टपापवुद्धिवकुम्भदिपराजीत ॥ कलाधर्मोलध्वयी
 चविकारीजातकोमवेत् ॥ २२ ॥ इतीवन्दुफलम् ॥ भौमेलजेकुरुपश्चरीगिव
 पुवीवर्जित ॥ असत्यवादीनोर्द्वौजायतेपारजातक ॥ २३ ॥ धनकुजेधर्महीन
 क्रोधाहीनश्चजायते ॥ दीर्घसूवोसत्यवादीपूत्रवानपीजायते ॥ २४ ॥ तृती

॥ राम ॥
 ॥ २४ ॥

येभूस्तो जातप्रतापीशीलसंगुत ॥ रणेयुरोरजमानोवीरव्यातश्चप्रजायते
 ॥ २५ ॥ चतुर्थेभूस्तकृष्णपीताधीक्योरीनीर्जित ॥ पृथाठनिहीनपुत्रोमहाका
 मीजजायते ॥ २६ ॥ पंचमेचधरापुत्रेकुसंतानीसदाहज ॥ बंधुवर्गीवीरकश्चनरोदीतो
 पीजायते ॥ २७ ॥ षष्ठेभौमेशाजुहीनोनानाथेपरिपुरित ॥ स्त्रीलालसपुष्टदेहशु
 भवीतश्चजायते ॥ २८ ॥ सप्तमेभूमीपुत्रेचरुधीराजोनीकोपवान् ॥ नेत्रसैविवंच
 काश्चनीफलोभवेत् ॥ २९ ॥ अष्टमेमंगलकुलस्वल्पापुशासपीडीत ॥ अल्पदु
 व्यश्चरोगश्चनीगुणोपीभवेत् ॥ ३० ॥ धर्मस्थोधारणीपुत्रोकुधर्मोगतपौरुषं ॥ नी
 चानुरागीकुरश्चसकलश्चप्रजायते ॥ ३१ ॥ कर्मस्थानेमहिपुत्रोभूमकर्मशु
 भान्वीत ॥ सुपुत्रीचसुखीशूरोकर्म्मिष्ठोपीभवेत् ॥ ३२ ॥ लाभेचभूमीनाथोना

॥ लज्ज च ॥ नापका नमश्चक ॥ नीरोजे नपमानश्च देवदि नरतो भवेत् ३३ ॥ असदये
 ॥ २६ ॥ योऽपि नैनास्तिको नीशुराशक ॥ वक्रवारी वीदे शेच सदागच्छती मानव ॥ ३४ ॥
 शिखी मफलम् ॥ लजे तुर्वे च गति ज्ञो नीपापो भूमी सुतीत ॥ रूप ज्ञानय
 यत्तो पागलभो मानवो भवेत् ॥ ३५ ॥ चन्द्र पुत्रे धन स्यात्ते धन वा न्यादी पुरित
 ॥ शुभ कर्मा सुखी नीत्परा न्यपु न्यश्च जायते ॥ ३६ ॥ नृति ये कुर्वे जाता प्रश
 स्तो वधु मानीत ॥ धर्म च्छो जीय शस्त्री च गुरु देवो वको भवेत् ॥ ३७ ॥ चंद्र
 पुत्रे चतुर्थे च वक्रु मस्य यशो न्वीत ॥ वक्रु वा न्यो भाग्य भाग्य गुरु सत्पदा दीव ॥ ३८ ॥
 ॥ २६ ॥

जायते ॥ ३८ ॥ पंचमे रोहीणी पुत्रे पुत्र पौत्र स मन्वीत ॥ स दुष्टि सुख संपन्न
 सुखो भवति मानव ॥ ३९ ॥ स ह्ये कुर्वे धेनु रांस श्रवीरी धी सर्व वं कुतु ॥ ईषी
 धीक कामपरो वीदा नपि भवेत् ॥ ४० ॥ सोम पुत्रे स प्रमे च रूप वीद्याधी को
 नर ॥ सुशीलो कामशास्त्र ज्ञो नारी मा न्यश्च जायते ॥ ४१ ॥ तुर्वे च मेरुत घु
 ॥ कुर्वी पारदारक ॥ कामातुरो सत्यवादी रोग गुतो भवेत् ॥ ४२ ॥ ध्व
 मे कुर्वे च मिकश्च कुपारा मादी कारक ॥ सत्यवादी च दान श्रजायते पीरुव
 सल ॥ ४३ ॥ दशमे च तुर्वे जातो धनवान् न्ययशो न्वीत ॥ वक्रु भाग्य श्रवी
 न्यधी काती युक्तश्च मानव ॥ ४४ ॥ लाभे सौम्ये नीत्य लाभो नीरोजश्च सदा सु

॥ लज्जन ॥ श्री ॥ जना नुरागवित श्रु कीर्ति जानी जायते ॥ ४५ ॥ ७१२ व्यापिलो कोरो जी वंधु
 ॥ २७ ॥ मन्त्रित ॥ पापरुपाधी न पर पक्षि च जायते ॥ ४६ ॥ इती बुध फल मं ॥ लज्ज
 रैकुशील श्रु प्रगल्भो रूप जानपी ॥ नृपानी श्रु अनिरो जी जानी सो मश्रु जा
 यते ॥ ४७ ॥ धनो जिवे धनिलो क कृत जो वंधु संयत गाव श्रु महिषी गुक्त को
 ती जानपी जायते ॥ ४८ ॥ जी वेरुति यते ज श्रु कर्म दक्षो जी ते न्दी य ॥ मोत्रा प्रसु
 ख संपन्न स्तो र्थ वार्ता प्री यो भवेत् ॥ ४९ ॥ सुखे जी वे सुखी लोक श्रु भगो राज ७
 जी रित ॥ वी जी तारे फुला ध्य क्षो गुरु मरु श्रु जायते ॥ ५० ॥ सुने जी वे सुते गुतो
 धार्मी कि पडित सुखि श्रु दु वे ता द या प्रु तो वी ज श्री च भवे न्तर ॥ ५१ ॥ घघे गुरौ वी ॥ राम ॥
 ॥ २७ ॥

प्रु प्रु को व द्रु रात्रु श्रु नी मुर ॥ उदेगी मत हां न श्रु काम को जायते जन ॥ ५२ ॥
 सप्र मे च सुग चार्यो काम वि तो महा बल ॥ धनि दाता प्रु गल्भ श्रु चीत्र कर्मी च
 जायते ॥ ५३ ॥ जी वे क्ष मे स दारो जी कृ पा शा क संयुत ॥ व द्रु वेरी कृ कर्मी च
 कुरु प श्रु भवे न्तर ॥ ५४ ॥ धर्म जी वे धर्म क र्ता सात्रु संगी च शास्त्र वीत ॥ नो री ह
 स्ति धर्म से वी च वल ज श्रु प्र जापत ॥ ५५ ॥ कर्म स्थि ते दुर चार्ये प्रु राप की र्ति
 सुखानोत ॥ राज तुल्य रूप श्रु दया लु जी य ते न्तर ॥ ५६ ॥ लाभे गुरु वी वे की
 चल सि वा श्रु दो भी गुत ॥ च वलो पी सु रूप श्रु गुरा वा न पी जायते ॥ ५७ ॥ व
 ये वृ ह स्प तो रो जी ल स नी पर कर्म कृत ॥ वंधू वेरी नी व से वि गुरु दे वी च जायते

॥ लज्जव ॥

॥ २८ ॥

॥ ५८ ॥ इति गुरुफलम् ॥ लज्जे शुकं सुशीलं श्रीवत्सलानामिह सुंदरं ॥ शु
चीतिद्वानमनो जन्मवेत् ॥ ५९ ॥ धने शुकं धनिद्वानं वंशुका न्योनृपा
विति ॥ नीरीजो राज्यमानश्च प्रतापी जायते ॥ ६० ॥ सुखे शुकं सुखीवीजो बहु
भार्यधनाधिक ॥ ग्रामाधी पयशस्वी च विवेकी च भवेत्तर ॥ ६१ ॥ शुकं सु
ते समस्तं श्रमरूपं श्रमदोन्तं उविप्रवशात्तैर्लुक्तं भुभोगोपी भवेत्तर ॥ ६२ ॥
वस्त्रे शुकं भवेद्भाजाग्रहानीर्भयान्वीतं दुसर्जकलही पौरैर्वीहैषी च सदा
नर ॥ ६३ ॥ सप्तमे भगुप्रे वधनिदीयागनायुत ॥ नीरोगसुखसंपन्नो बहुभाज
प्रजायते ॥ ६४ ॥ अथ मस्ये दैत्यपूज्यसो गकलहरीय ॥ वृद्धगामी कार्यही

॥ राम ॥

॥ २८ ॥

नो जतानाम्नीयो भवेत् ॥ ६५ ॥ धर्मे शुकं धर्मप्रणो जा नवदु सुखी धनि ॥ न
रेंद्रसा न्योवीनयी नगरां स्व जतो भवेत् ॥ ६६ ॥ कर्मस्थिते भगो पुत्रे कर्मवान्नी
धीरन्तवान् ॥ राजसेवी धर्मकश्च जायते दीपिता प्रीय ॥ ६७ ॥ लाभे शुकं सदा ला
भोयशस्वी च गुरां वीत ॥ धनिभोगी कीया गुडो जायते मानवो नम ॥ ६८ ॥ वाये
शुकं वयाख्यं श्रुगुरुमोत्रवीरो धवान् ॥ मीथ्यावादी वंशुवर्गो गुराहीनो पजायते
॥ ६९ ॥ इती शुकफलम् ॥ लज्जे रा नो सदा रोगी कुरुपकृपणो नर ॥ कुसीलपापव
दि श्रुशठं भवति क्वंन ॥ ७० ॥ धने मंदे धनो हि नो वातापितक फरागुर ॥ देहा
स्थिपीतरो गश्रुगुरो लोपी जायते ॥ ७१ ॥ काशात्प्रजेतृति यस्ये प्रसन्नो ग

॥ लज्जन् ॥

॥ २६ ॥

शावत्सल ॥ शत्रुमदीनरोमान्योपनिशुभ्र जायते ॥ ७२ ॥ मुखे मंदे सुखे हीनो
हताथो वीर्यवैर ॥ गुणस्वभो वो दुःखगी कुजने आहत सठ ॥ ७३ ॥ पुत्रे मं
दे पुत्रहि नो कीया कीती विवर्जित ॥ हीन शोको वीर्यश्रमानवो भवति कुव ॥ ७४ ॥
शत्रुस्थाने स्थिते स दे शत्रुहीनो महाधनि पशु पुत्रयशो गुक्तो नीरोगो जाय
ते नर ॥ ७५ ॥ कलत्रस्थे मीत्र पुत्रे कुकलत्रो रुजान्वीत ॥ बहु शत्रु वीर्या
श्रुश्रुश्रमली नो भवेत् ॥ ७६ ॥ वंशानुशेष मम देहीर दो वहु रोगवान्
मीथ्या वीवादकर्ता च प्ररुषो पीमेध्व ॥ ७७ ॥ धर्म मंदे धर्म मंदे नीर
वे कीदी यो वश ॥ मृश सो नयते लोक परदारत सदा ॥ ७८ ॥ कर्मस्थाने
सुर्यो पुत्रे कुकर्म धनवर्जित ॥ दया सत्यगुरौ हीनश्च चलो पीमेध्व नर

॥ १५ ॥

॥ २६ ॥

स्मृति ॥ इति श्री जन्मफलम् ॥ इति श्री काशीनाथकृतौ लज्जन् चन्द्रोकायां
कगृहयोगाध्यायसमाप्तम् ॥ मृधनरचक्रवीधो लोख्यते ॥ लोख्यो नानरचक्र
चसुर्यो यत्र स्थित ॥ तन्मदाजादीकं हत्वा यदद्याच्चमस्तके ॥ ७३ ॥ वदने चत्र
यदद्यादेकैकं स्तं धयोर्दुयो ॥ बाहुद्वये तथैकैकं पाशोरेकैकं हवेव च ॥ ७४ ॥ मृक्षा
गोहृदे येष च ॥ नाभौ स्यादमके रहि ॥ मृक्षगुले वदेकमेकैकं जानुगे द्वये ॥
मस्त ॥ ७५ ॥ क ॥ ग ॥ ह ॥ ह ॥ ना ॥ गु ॥ जा ॥ चर ॥ सुखी ॥ नक्षत्राणी ॥ यदु स्यात्तीक्ष्णं तदुद्धयेतु च
॥ ७६ ॥ ३ ॥ २ ॥ २ ॥ ३ ॥ ५ ॥ १ ॥ १ ॥ २ ॥ ६ ॥ चक्रम ॥ पादस्थिते च नक्षत्रे नीचलोत्पापरेव च
॥ ७७ ॥ वीदेशगमन जातौ गुह्ये स्यात्पीदारक ॥ मृत्युतो वीभवे नानो हृदये तीक्ष्णरस्म
या ॥ ७८ ॥ तस्करः पाशिशुभे च बाहुस्थाने च्युतो भवेत् ॥ स्तं धे गजस्क धे गामी मु

॥ लज्जच ॥ खेरी का नमो जत ॥ ३ ॥ मलकस्थे च नक्षत्रे पटे वधी भवे दार ॥ मुख्य नक्षत्र तो जन्म
 ॥ ३१ ॥ नक्षत्रावधि गणपते ॥ ४ ॥ इति श्री चक्र ॥ जन्म राशि अक्षरा नक्षत्रा नक्षत्रावधि मातृकं
 प्रमाणे द्वा राक प्राज्ञां द्वा स्ते व शुभा शुभं ॥ ५ ॥ चडास्ये च के च यु करे च यु च यु दी ॥ च
 यपादे च यु के द्वा तव्ये गण को तमे ॥ ६ ॥ मुखे हा नी श्री वी जे या धन ला मो ही प च के ॥ हस्ते
 राज भां चं चं राज मा न्यो च यु के ॥ ७ ॥ स्थान न हो भवे त्या दे के ठे सर्व सुख भवेत् ॥ इति च
 चक्र ॥ यस्मिन् चक्र भवे द्वा म भयं तस्या ॥ मुख ॥ ८ ॥ क ॥ ९ ॥ च ॥ के ॥ च ॥ च ॥ त्र से स्य
 जेत् ॥ नवै चं यो लो च चुरं कवा ह यु म ॥ ६ ॥ ६ ॥ ६ ॥ ३ ॥ ३ ॥ ३ ॥ चक्र ॥ ॥ ॥
 मु ॥ ने ॥ यो ॥ वा ॥ स्के ॥ ६ ॥ ९ ॥ च ॥ श्री म ॥ के ॥ ८ ॥ के ठे दे ह ये प च यु गु से पा दे दे या तं च ॥ राम ॥
 ॥ ३ ॥ ३ ॥ ३ ॥ ४ ॥ २ ॥ ५ ॥ ३ ॥ ४ ॥ चक्र ॥ जेत् ॥ राम वा लो भवे द्वा गो दक्षि राणे गा के ॥ ३१ ॥